## डॉ. अभिषेक कुमार

इश्क से आबाद है एक घर मुझमें
दिल में मोहब्बत का है बसर मुझमें

सब्र रखने की सीख देता है ये फूल
बस यही एक चीज मुख़्तसर मुझमें

अपनी मर्जी से चलता कहाँ दो कदम
जमाने भर का भरा है डर मुझमें

आशियाँ था नहीं गर बनाना तुझको
फिर आया था तु क्या सोचकर मुझमें

यार मेरे कभी मुझको दिल से महसूस कर
यूँ आना - जाना छोड़ दो घड़ी ठहर मुझमें

## अभिषेक सिंह

खुशी की हो लहर या दुख की धारा, सब तुम्हारा।
हमारे पास है जो कुछ हमारा, सब तुम्हारा।

अँधेरा छोड़कर सारा का सारा, सब तुम्हारा,
हमारे दिल का हर रौशन सितारा, सब तुम्हारा।

जिसे चाहो उसे नज़रों में अपनी क़ैद कर लो,
मेरे हिस्से का हर दिलकश नज़ारा, सब तुम्हारा।

कहाँ अब तैर कर जाऊँ किसी मंज़िल की खातिर,
नदी, पतवार, नौका या किनारा, सब तुम्हारा।

हमारे पास तो दिल का यही कमरा बचा है,
यहाँ का रंग-रोगन, ईट-गारा सब तुम्हारा।

हमारे पास तो कुछ भी नहीं जो दे सकें हम,
हमारे पास है जो भी हमारा , सब तुम्हारा।


ISSN:2583-8849